"ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

आई. आई. एम. टी. विश्वविद्यालय, मेरठ

के अन्तर्गत

शिक्षा शास्त्र विषय में

डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी (पीएच. डी.) की

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध की संक्षिप्त रुपरेखा

शोधार्थिनी

सरिता तिर्की

नामांकन सं.–**IIMTU/A-4205**

शोध निर्देशिका

डॉ0 सरिता गोस्वामी

प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्षा

शिक्षा संकाय

आई. आई. एम. टी. विश्वविद्यालय,

'ओ' पॉकेट, गंगा नगर , मवाना रोड, मेरठ (यूपी) -250001

-------------2019---------------

1. प्रस्तावना

1.1 शोध समस्या की पृष्ठभूमि

प्राचीन भारत में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था, वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समुन्नत व उत्कृष्ट थी, लेकिन कालान्तर में भारतीय शिक्षा के व्यवस्था में ह्रास हुआ है। अपने संक्रमण काल में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। आज भी ये चुनौतियाँ एवं समस्याएँ हमारे समक्ष विद्यमान है, उन चुनौतियों व समस्याओं में प्रमुख समस्याएँ निम्न है – अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक कुरीतियाँ इत्यादि। अशिक्षा, निर्धनता तथा बेरोजगारी एक ऐसी समस्या है, जो आने वाली पीढ़ी को और अधिक प्रभावित करती है, क्योंकि अशिक्षा निर्धनता और बेरोजगारी के कारण अभिभावक अपने बच्चों को सही शिक्षा नहीं दे पाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे अपने औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्वयं प्रयास करना शुरू करते हैं। इस प्रयास के क्रम में या तो वे कहीं दिहाड़ी मजदूरी करते हैं और विद्यालय भी जाते हैं या फिर घरेलू कार्य करते हुए अपना स्कूली शिक्षा पूरा करते हैं। इस तरह के शारीरिक और मानसिक परिश्रम करने से उनकी औपचारिक शिक्षा प्रभावित होती है। बच्चों का इस तरह दूसरों के यहाँ काम करना एक तरह से मजदूरी का ही कार्य है तथा विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करते हुए मजदूरी करने वाले को श्रमिक विद्यार्थी कहा जा सकता है।

1.2 शोध में प्रयुक्त चरों का संकल्पनात्मक विवरण

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में रोटी, कपड़ा और मकान के बाद सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता शिक्षा है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती है। व्यक्ति के वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है और उसे वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। जीवन और शिक्षा के माध्यम से मानव अपने नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार होता है। जिससे उसका व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण परिलक्षित होने लगता है। इस प्रकार की शिक्षा रूपी प्रक्रिया से व्यवहार रूपी परिणाम में परिवर्तन होना किसी भी देश, राष्ट्र या मानव के लिए हितकर होता है।

आज के बालक ही कल राष्ट्र के कर्णधार हैं। उनका निर्माण उनकी परिपक्व आयु उपलब्ध होने पर नहीं, बाल्यावस्था में ही संभव है। संतानोत्पत्ति के उपरान्त सबसे महत्वपूर्ण उपक्रम है – उन्हें बड़ा करना, उन्हें शिक्षा–दीक्षा देना बच्चे की प्रथम

पाठशाला परिवार है और उस पाठशाला के शिक्षक, अभिभावक याने माता–पिता होते हैं। अतः अभिभावकों की भूमिका का पता इस बात से लगाई जा सकती है कि बच्चे बाल्यावस्था में कोरे–कागज के समान होते हैं इस कोरे कागज पर चाहे काली स्याही से लिख दें अथवा रंगीन कलाकृति ढाल दें बालक उसी रूप में ढलता है।

श्रमिक - साधारण शब्दों में श्रम का अर्थ है 'मेहनत करना' तथा मेहनत करने वालों को श्रमिक कहा जाता है। श्रम करने का संबंध आर्थिक कार्य से है, चाहे वह शारीरिक रूप से किया जाय या फिर मानसिक रूप से किया जाय। अतः श्रम वह मानसिक तथा शारीरिक क्रिया है जो अंशतः या पूर्णतः किसी आर्थिक उद्देश्य से किया जाता है। श्रमिक के अन्तर्गत महिला व पुरूष या विभिन्न आयु वर्ग के बालक हो सकते हैं। परन्तु 14 वर्ष के कम उम्र के श्रमिकों को 'बाल श्रमिक' कहा जाता है। प्रस्तुत शोध में 14 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के विद्यार्थी श्रमिकों को लिया गया है, क्योंकि हम यह जानते हैं कि विद्यार्थियों का रूप लावण्य और शील समन्वित होने पर भी शिक्षा से विभूषित होना भी परम आवश्यक है।

श्रमिक विद्यार्थी - 'श्रमिक विद्यार्थी' की अवधारणा का निर्माण 'बाल श्रमिक' शब्द से हुआ है। बाल श्रमिकों के विभाजन को लोग अलग–अलग नजरिये से देखते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चे जो अपने आमदनी के लिए घरेलू कार्य, कारखानों, फैक्टरियों या अन्य विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं, बाल श्रमिक की श्रेणी में आते हैं। इन्हीं श्रेणियों में एक वर्ग ऐसा भी आता है जो औपचारिक शिक्षा प्राप्त करते ही स्वावलंबन के लिए श्रम करता है, जिन्हें श्रमिक विद्यार्थी भी कहा जाता है। ये विद्यार्थी औपचारिक शिक्षा में आने वाले खर्च को वहन करने के लिए श्रम करते हैं तथा मजदूरी से मिले पारिश्रम को अपने पढ़ाई के लिए शिक्षण सामग्री खरीदने में खर्च करते हैं, काम की प्रकृति विद्यालय के समय से पहले या बाद होती है या फिर छुटिट्यों के दिनों में मजदूरी करते हैं।

आत्म प्रत्यय - आत्मप्रत्यय का तात्पर्य व्यक्ति के स्वयं से है, जिससे मानव अपनी बाल्यावस्था से जैसे–जैसे बाहर आता है, अपने चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होकर तथा कुछ स्वयं के जन्मजात के गुणों के आधार पर अनुभवी होता जाता है और यही अनुभव उसके आत्म का आधार बनते जाते हैं, जिसके कारण आत्म प्रतिबिम्बित

प्रतिमाएँ बनती है। आत्मप्रत्यय के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक कार्ल रोजर्स और इब्राहिम मास्लो स्वयं 'अवधारणा' की धारणा स्थापित करने के लिए जाने जाते हैं। रोजर्स के अनुसार हर कोई 'आदर्श स्वयं' तक पहुँचने के लिए प्रयासरत है। वे मानसिक रूप से स्वस्थ लोगों को सक्रिय रूप से दूसरे की अपेक्षाओं के द्वारा बनायी गयी भूमिकाओं से दूर ले जाते हैं और इसके बजाए सत्यापन के लिए स्वयं के अन्दर धारण करती है।

मूल्य - मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया, विचार को अपनाने के पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाये व त्याग दे। जब ऐसा विचार भाव व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है, तो वह मूल्य कहलाता है। मूल्य एक प्रकार का मानक या मानदण्ड है। 'मूल्य' पद का अर्थ समाज विज्ञान या दर्शनशास्त्र में किसी भी तरह से स्पष्ट नहीं है। मैकमिलन व नैलर (1964) में कहा है कि हम किसी भी एक परिभाषा पर एकमत नहीं हो सकते हैं। मतैक्य के रूप में तो केवल इतना कहा जा सकता है कि मूल्य मानव अस्तित्व में किसी महत्वपूर्ण चीज का प्रतिनिधित्व करते हैं। मूल्य इच्छा, रूची पसंद, मेहनत करने, संकल्प शक्ति, कार्य तथा संतोष जैसे विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है। व्यक्ति के निजी जीवन में इन सभी कारकों के परिणामस्वरुप ही मूल्य विकसित होता है तथा वे व्यक्ति के अनुभावों से अत्यधिक जुड़े रहते हैं।

शिक्षा प्रणालियों ने राष्ट्रों के भविष्य को आकार दिया। अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा व्यक्तियों का पोषण करती है और शरीर, मन और आत्मा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करती है। संघर्षग्रस्त विश्व को ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो स्वयं, समाज और प्रकृति के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित कर सकें।

शैक्षिक उपलब्धि - शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक व समृद्ध बनाती है। आधुनिक तथा भौतिकवादी युग में प्रत्येक क्षेत्र में एक कुशल व्यक्ति की आवश्यकता होती है और वह कुशल व्यक्ति एक शिक्षित व्यक्ति ही हो सकता है। शिक्षा के माध्यम से बालक के प्रवृत्तियों का शोधन और परिष्करण होता है। शिक्षा प्राप्ति के कई प्रकार हैं – औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक। इनमें से औपचारिक शिक्षा जो नियमित और निश्चित तौर पर प्रदान की जाती है, जिसमें विद्यार्थियों के उपलब्धियों का समय–समय पर आकलन किया जाता है, जिसे शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है। इसके आधार पर विद्यार्थी आगे की कक्षाओं में प्रवेश करते हैं। साथ ही इन्हीं परीक्षणों के

आधार पर शैक्षिक निर्देशन, व्यक्तिगत विभेदन तथा व्यवसायिक निर्देशन देने के लिए दिशा–निर्देश मिल जाता है। शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण से विद्यार्थियों के शिक्षा संबंधी समस्याओं का भी पता चलता है।

1.3 झारखण्ड में समस्या की स्थिति एवं औचित्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययनहै।

झारखंड 2000 में बिहार के बड़े राज्य से बना है और इसकी आबादी 32.9 लाख (जनगणना 2011) है, जो 33,000 गांवों में फैले लगभग 120,000 घरों में रहता है। राज्य में लगभग 38 प्रतिशत लोग अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के वंचित समुदायों के हैं। भारत के खनिज संसाधनों का लगभग 40 प्रतिशत झारखंड में है और इसका 28 प्रतिशत वन क्षेत्र है। राज्य में 2000 से पिछले 12 वर्षों में आठ सरकारें मुख्यमंत्री और राष्ट्रपति शासन के तीन कार्यकाल देखे गए हैं।

राज्य सरकार या केन्द्र सरकार के प्रयासों के बाद भी इन सभी पिछड़े वर्गों का साक्षरता दर बढ़ने के बजाय कम होता जा रहा है। सरकार की योजनाओं का लाभ विभिन्न कारणों से वे ले नहीं पाते फलतः आज झारखण्ड से बाहर कार्य पर जाने वाले श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हो रही हैं। झारखण्ड के करीब 25,000 बाल मजदूर बाहर भेजे जाते है 2001 की जनगणना के अनुसार दिल्ली में 50,000 बाल मजदूर जो झारखण्ड के है दिल्ली में कार्यरत हर पाँचवा बाल मजदूर झारखण्ड का है।

बालक और बालिकाएँ भी आर्थिक तंगी के कारण बीच में पढ़ाई छोड़ कर मजदूरी के लिए पलायन कर जाते है उन्हीं में से कुछ जो स्थानीय श्रमिक के रूप में कार्य करते हैं उनमें कुछ बालक अखबार विक्रेता कुछ कृषि संबंधित मजदूरी तथा कुछ दिहाड़ी मजदूरी करते हैं। वहीं विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राएँ भी घरेलू कार्यों में लगी हैं या फिर दिहाड़ी मजदूरी करती है अर्थात विद्यालय में अध्ययनरत बालक तथा बालिकाएँ पढ़ाई जारी रखने के लिए मजदूरी करते है।

विद्यालय में अध्ययनरत् श्रमिक विद्यार्थियों की स्थिति को प्रभावित करने वाले कारक निम्न है :–

(1) आर्थिक

(2) सामाजिक

(3) पारिवारिक

(4) अभिभावकों में जागरूकता की कमी

(5) अभिभावकों का निरक्षर होना इत्यादि।

उपरोक्त तथ्य श्रमिक के रूप में कार्य करने के लिए मजबूर करते है। वैसे देखा जाए तो विद्यार्थियों का स्र्वांगीण विकास ही प्रभावित होता है जिसमें शारीरिक, मानसिक बौद्धिक, सांवेगिक, शैक्षिक, मूल्य, आत्मप्रत्यय विकास इत्यादि। यहाँ हम श्रमिक विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय, मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि का संक्षिप्त अध्ययन करेंगे।

आत्म एवं पहचान का संदर्भ हमारे चारों ओर के पर्यावरण से जुड़ाव रखता है। मानव अपनी बाल्यावस्था से जैसे–जैसे बाहर आता है, अर्थात् बड़ा होता है, उसके आत्मा का विकास होता जाता है। वह अपने चारों ओर के वातावरण के प्रति जागरुक होने लगता है। मानव के आत्म अवधारणा का सन्दर्भ सदैव उसके माता–पिता, अभिभावक, गुरुजन, मित्रगण आदि से संबंधित होता है। वह प्रतिक्रिया अन्तःक्रिया आदि करता है, उसे अनुभव होते हैं और ये अनुभव उसको अर्थ प्रदान करते हैं और यही अनुभव उसके आत्म का आधार बनते हैं, जिसके कारण उसकी आत्म प्रतिबिम्बित प्रतिमाएँ बनती है।

आत्मप्रत्यय के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक कार्ल रोजर्स और इब्राहिम मास्लो **'स्वयं अवधारणा'** की धारणा स्थापित करने के लिए जाने जाते हैं। रोजर्स के मुताबिक हर कोई 'आदर्श स्वं' तक पहुँचने के लिए प्रयासरत है। रोजर्स भी मानसिक रूप से स्वस्थ लोगों को सक्रिय रूप से दूसरों की अपेक्षाओं के द्वारा बनाई गई भूमिकाओं से दूर ले जाते हैं और इसके बजाए सत्यापन के लिए स्वयं के भीतर धारणा करती है।

मूल्य की अवधारणा मनुष्य के प्रत्येक चुनाव निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है जब हम दो वस्तुओं या दो मनोरथों में चुनाव करते हैं तो उस मनोरथ को प्राप्त करने का निश्चय करते हैं जो अधिक श्रेष्ठ और इसी निर्णय के अनुसार जीवन में कार्य करते हैं।

किसी भी इंसान के जीवन में मूल्यों का अहम् योगदान रहता हैं क्योंकि इन्हीं के आधार पर अच्छा बुरा या सही गलत की परख की जाती है इंसान के जीवन की सबसे पहली पाठशाला उसका अपना परिवार ही होता है और परिवार समाज का

एक अंग है उसके बाद उसका विद्यालय, जहाँ से उसे शिक्षा हासिल होती है। परिवार, समाज और विद्यालय के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों और मानव मूल्यों का विकास होता हैं।

अतः इस शोध में श्रमिक विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन किया जाएगा, कि कौन–कौन से कारक सहयोगात्मक तथा बाधक है ?

शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है आज के समाज में अशिक्षित व्यक्ति को प्रायः उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही बालक की प्रवृतियों का शोधन और परिष्करण होता है। शिक्षा के कई प्रकार है औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक। औपचारिक शिक्षा जहाँ नियमित और निश्चित तौर पर शिक्षा प्रदान की जाती है इस नियमित शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य विद्यार्थियों का उपलब्धि परीक्षण कराना है जिसमें शैक्षिक उपलब्धि अति महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी आकलन के आधार पर विद्यार्थी आगे के कक्षाओं में प्रवेश पाते साथ ही इन्हीं परीक्षण के परिणामों के आधार पर शैक्षिक निर्देशन, व्यक्तिगत विभेदन तथा व्यावसायिक निर्देशन दिया जा सकता है।

अतः विद्यार्थी श्रमिकों के शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि उसके अनुरूप उन्हें दिषा निर्देशित किया जा सकता है साथ ही शिक्षा प्राप्त करने में आने वाले बाधाओं का पता भी शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के परिणाम कराया जा सकता है।

वैज्ञानिक तथा भौतिकवादी युग में जीवन के विविध क्षेत्रों में आत्म प्रत्यय अर्थात् स्वयं को समझने की शक्ति में गिरावट तथा मूल्यों का निरंतर पतन हो रहा है जिससे समस्त मानवीय व्यवहार अनिश्चित हो गया है। विद्यार्थियों के समूह में कुछ ऐसे भी विद्यार्थी हैं जो श्रमिक के रूप में काम करते तथा जिन्हें रोटी कपड़ा और शिक्षा की चिंता सताती रहती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी मनोरोगों से पीड़ित होकर विकृत व्यवहार की तरफ अग्रसर हो रहे हैं साथ ही उनमें आत्मप्रत्यय तथा मूल्य जैसे गुणों की कमी के कारण आज शिक्षा में गुणात्मकता की कमी देखी जा रही है इसी गुणात्मकता की कमी के कारण शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित हो रहा है क्योंकि एक अनुशासित तथा स्वयं को समझने वाला बालक ही गुणवान विद्यार्थी बन सकता है। अतः छात्रों में भौतिकता तथा आध्यात्मिकता के बीच संतुलन बनाये रखना अति आवश्यक है और संतुलन बनाने का

सशक्त माध्यम है मूल्य शिक्षा। मूल्य विकास हेतु विद्यालय की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालय समाज का लघु रूप होता है और औपचारिक अभिकरण के रूप में विद्यालय जब तक बालकों के विकास हेतु उचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं करेगा। तब तक बालक का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। चूँकि आत्मप्रत्यय और मूल्य का संबंध घनिष्ठ है दोनों ही बालक के गुणात्मक विकास की ओर प्रेरित करते हैं क्योंकि यदि बालक स्वयं को समझ जाता है कि 'मैं कौन हूँ' तो स्वतः ही उसमें मूल्यों का निर्माण हो जाएगा तथा यदि बालक को मूल्य शिक्षा प्रदान की जाए तो बालक को स्वयं को पहचानने में या स्वयं को समझने में सहायता मिलेगी अर्थात एक के विकास से दोनों (आत्मप्रत्यय तथा मूल्य) का स्वाभाविक विकास हो पाएगा जिससे बालकों में सर्वांगीण और संतुलित विकास की क्षमता विकसित होगी। खासकर शिक्षा के क्षेत्र में यदि आत्मप्रत्यय और मूल्य का सम्मिश्रण कर दिया जाए तो दोनों के मिश्रण से एक गुणवान व्यक्तित्व का निर्माण हो सकेगा और जहाँ गुणात्मक शिक्षा होगी वहाँ के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि निश्चित तौर पर उच्च होने की संभावना रहेगी।

अतः बालक के सर्वांगीण और संतुलित विकास हेतु आत्मप्रत्यय तथा मूल्य का होना अति आवश्यक है। इन विद्यमान गुणों के कारण बालकों की शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति उच्च होने की संभावना होगी। श्रमिक विद्यार्थी जो पिछड़े वर्ग से आते हैं उनके परिवार में मूल्यों की कमी पायी जाती, दूर होने की अधिकांश संभावना रहेगी उनमें आत्मप्रत्यय तथा मूल्य निर्माण से शिक्षा का दीप जलेगा जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होगी।

इस प्रकार विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थी श्रमिकों का अध्ययन अति महत्वपूर्ण है इस शोध के माध्यम से विद्यार्थी अवस्था के साथ–साथ श्रमिक के रूप में काम करने से किस तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हैं, का अध्ययन किया जाएगा साथ ही कौन–कौन से महत्वपूर्ण कारक हैं जो उनके आत्मप्रत्यय, मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते है, का अध्ययन किया जाएगा तथा प्राप्त परिणामों के अनुसार सुझाव अर्थात निर्देशन प्रस्तुत किया जाएगा। अतः इस प्रकरण पर शोध अति महत्वपूर्ण है जिसे आने वाली पीढ़ी लाभान्वित होगी।

1.4 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज हमारा देश विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रसित है, जिनमें प्रमुख रूप से बेरोजगारी, निर्धनता, जनसंख्या वृद्धि, अशिक्षा, असमानता, भ्रष्टाचार, बाल श्रम, श्रमिक

असंतोष, दहेज प्रथा, अस्पृश्यता तथा नशाखोरी है। इन सभी समस्याओं के निराकरण के लिए मौजूदा सरकार के द्वारा प्रयास तो किये ही जा रहे हैं, परन्तु आज भी ये समस्याएँ समाज में विद्यमान है तथा समाज को खोखला बनाते जा रहे हैं। जहाँ एक ओर हम विकास की ऊँचाईयों को छूने के लिए तैयार है, वहीं दूसरी ओर पतन की शुरूआत भी करते जा रहे हैं। ऐसे हालात में क्या हम देश का भविष्य गढ़ने का प्रयास कर रहे हैं? क्या व्यक्ति समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझ पा रहा है? क्या व्यक्ति स्वयं को समझ पा रहा है? क्या व्यक्ति नैतिक बन पा रहा है?

ऊपर वर्णित विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर दृष्टिपात करने पर यह पता चलता है कि प्रत्येक समस्या एक–दूसरे के पतन का कासरण है। इन समस्याओं में सबसे प्रमुख समस्या गरीबी है और इस गरीबी की समस्या ही सारे समस्याओं की जड़ है। गरीबी के कारण ही लोग अशिक्षित होते जा रहे हैं तथा जहाँ व्यक्ति अशिक्षित होगा, वहाँ अंधविश्वास तथा अज्ञानता व्याप्त होगी। इन विभिन्न समस्याओं की व्याप्तता के परिणामस्वरूप आज समाज की और बड़ी तथा चुनौतीपूर्ण समस्या जो पहले से ही विद्यमान थी तथा आज भी रूकने का नाम नहीं ले रही है, वो है बाल श्रम। बालश्रम मौजूदा समय की सबसे बड़ी और गंभीर समस्या है, क्योंकि देश का भविष्य गढ़ने वाले बच्चों के कंधे पर जहाँ बस्ता होना चाहिए, जिनके हाथों में खिलौने होने चाहिए और जो अपनी बचपनावस्था को माता–पिता की छांव गुजार सके। आज उन्हीं के हाथों कहीं अखबार की प्रति, तो कहीं चाय की केतली तथा विभिन्न तरह की जिम्मेदारियाँ। ऐसे में ये बच्चे अपने देश का भार अपने बच्चों पर कैसे उठा पाएँगे?

बाल श्रम का सबसे बड़ा कारण है गरीबी। गरीब माता–पिता परिवार के भरण–पोषण के लिए सिर्फ दो जून की रोटी कमाने में ही जुटे रहते हैं। इस हालात में भी अपने बच्चों को शिक्षा देने के बारे में सोच भी नहीं सकते, वहीं माता–पिता की अशिक्षा भी एक कारण है, जो बच्चों को बाल श्रम करने के लिए मजबूर करती है, क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति ही शिक्षा की महत्ता को समझ पाता है। बाल श्रम के श्रेणी में कई प्रकार के काम करने वाले बच्चे पाये जाते हैं, जिनमें एक श्रेणी ऐसे भी हैं, जो अपने द्वारा मिले पारिश्रमिक से स्वयं औपचारिक षिक्षा ग्रहण करने की जिज्ञासा रखते हो, वैसे बच्चे को श्रमिक विद्यार्थी कहा जा सकता है। यह बच्चे भी मजबूरीवश अपने पढ़ाई को जारी रखने के लिए मजदूरी करते हैं। यह समस्या समाज की एक ज्वलंत तथा गंभीर समस्या है, क्योंकि जो बच्चे शारीरिक परिश्रम कर यदि औपचारिक शिक्षा प्राप्त करेंगे, तो इनकी मानसिक, शारीरक, बौद्धिक, चारित्रिक, नैतिक, संवेगात्मक अर्थात्

सर्वांगीण विकास की स्थिति के बारे में कल्पना की जा सकती है, क्योंकि जिस समय उन्हें सिर्फ स्कूल शिक्षा प्राप्त करना है, उस समय यह माता–पिता के कंधों का भी भार उठा रहे हैं और स्वयं की शिक्षा की भी भार वहन कर रहे हैं। अतः ऐसे बच्चों को स्वावलंबी की संज्ञा देना भी न्यायोचित होगी।

अतः इस वैज्ञानिक तथा भौतिकवादी युग में जीवन के विविध क्षेत्रों के विकास के लिए इन सभी समस्याओं के निराकरण की अतिआवश्यकता है तथा सभी तरह के विकास का साधन है शिक्षा, जो मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि आज समाज में अशिक्षित व्यक्ति को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है।

2. समस्या कथन

''ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।''

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरण

- **श्रमिक :** श्रम का मतलब है मजदूरी करना अतः मजदूरी करने वाले को श्रमिक कहा जाता है।

- **विद्यार्थी :** ये दो शब्दों से मिलकर बना है 'विद्या + अर्थी' विद्या का अर्थ है, ज्ञान और अर्थी का अर्थ है अर्जन या ग्रहण करना अर्थात विद्यार्थी का शाब्दिक अर्थ है विद्या अर्जन करने वाला।

- **श्रमिक विद्यार्थी :** श्रमिक विद्यार्थी का तात्पर्य है औपचारिक शिक्षा ग्रहण करते हुए अर्थात अध्ययन करने के साथ–साथ मजदूरी करना। प्रस्तावित शोध में कक्षा 12 तक अध्ययन करने वाले श्रमिक विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा।

- **आत्मप्रत्यय :** आत्मप्रत्यय या आत्मधारणा अकादमिक प्रदर्शन के रूप में तत्वों में शामिल है, ये अपने आप के बारे में विश्वास का एक संग्रह है, जिसमें लिंग, भूमिकाओं और जातीय पहचान किया जाता है। आमतौर पर आत्मधारणा **''मैं कौन हूँ''** इस जवाब का प्रतीक है। आत्मधारणा ये वह जगह है, वह छवि जिसे हमने अपने बारे में बनाया है, बिल्कुल एक दृश्य छवि नहीं बल्कि यह उन विचारों का सेट है, जो

हम मानते हैं जो हमें एक सचेत और बेहोश स्तर पर परिभाषित करते हैं। इसमें व्यावहारिक रूप से असीमित अवधारणाएँ शामिल हैं, जिन्हें इस छवि में स्वयं के बारे में शामिल किया जा सकता है। प्रत्येक विचार में इसके अन्दर कई अन्य शामिल हो सकते हैं। एक–दूसरे के भीतर श्रेणियों की प्रणालियों का निर्माण कर सकते हैं।

आत्मप्रत्यय स्वयं को देखने के हमारे तरीके के संज्ञानात्मक पहलू को संदर्भित करती है। यह एक सैद्धांतिक निर्माण है, जिसके साथ मनोवैज्ञानिक काम करते हैं। अतः आत्म अवधारणा विशेषताओं (सौंदर्य, शारीरिक, प्रभावशाली आदि) का सेट है, जो **''मुझे''** की छवि को परिभाषित करने के लिए काम करती है।

अतः इस शोध में भी ग्रामीण तथा शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय का अध्ययन किया जाएगा कि कौन–कौन से कारक उनके आत्म प्रत्यय निर्माण को प्रभावित कर रहे हैं।

- **मूल्य :** मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है, जो समालोचना व वरीयता प्रकट करता है। यह एक आदर्श या इच्छा है, जिसे पूरा करने के लिए व्यक्ति जीता है तथा आजीवन प्रयास करता है।

सी०वी० गुड – ''मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्य–बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है, लगभग सभी विचार मूल्यों के अभीष्ट चरित्र को स्वीकार करते हैं।''

आलपोर्ट – ''मूल्य एक मानव विश्वास है, जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।''

अतः इस शोध में मूल्य की महत्ता को देखते हुए ग्रामीण तथा शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के मूल्यों का भी अध्ययन किया जाएगा।

- **शैक्षिक उपलब्धि :**

शैक्षिक उपलब्धि वह है जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक विकास की गति का द्योतक है।

अतः ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना अति आवश्यक है, ताकि उसके अनुरूप उन्हें दिशा निर्देशित किया जा सकता है। साथ ही शिक्षा प्राप्त करने में आने वाले बाधाओं का पता भी शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के परिणामस्वरूप ही लगाया जा सकता है।

3. शोध का उद्देश्य

3. शोध का उद्देश्य

शोध एक सोद्देश्य प्रक्रिया है, प्रत्येक क्षेत्र में शोध कार्यों का नियोजन किया जाता है, जिनका अपना विशिष्ट उद्देश्य होता है। साधारणतः शोध के तीन उद्देश्य माने जाते हैं सैद्धांतिक, तथ्यात्मक तथा व्यावहारिक। शोध कार्य के द्वारा नवीन सिद्धांतों का प्रतिपादन या किसी नवीन व्यावहारिकता को प्रस्तुत किया जाता है। अतः इस अध्ययन के भी निम्न उद्देश्य हैं –

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय के बौद्धिक आयाम का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय के सामाजिक आयाम का तुलनात्मक अध्ययनरत करना।

1.3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिका विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय के चरित्र आयाम का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.4 उच्च माध्यमिक स्तरर पर अध्ययनरत ग्रामीण व एवं शहरी श्रमिकों विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय के भावनात्मक आयाम का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.5 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय के सौन्दर्यात्मक आयाम का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियो के मूल्यो का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के लोकतात्रिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.4 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.5 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के सुखान्त मूल्य का तुलनात्मक अध्ययनरत करना।

2.6 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के शक्ति मूल्य का तुलनात्मक अध्ययनरत करना।

2.7 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.8 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के स्वास्थ्य मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय एवं मूल्यों में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

5 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिणिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन करना।

6 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के मूल्यों एवं शैक्षिणिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएं

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय के बौद्धिक आयाम के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय के सामाजिक आयाम के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिका विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय के चरित्र आयाम के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.4 उच्च माध्यमिक स्तरर पर अध्ययनरत ग्रामीण व एवं शहरी श्रमिकों विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय के भावनात्मक आयाम के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय के सौन्दर्यात्मक आयाम के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियो के मूल्यो के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के लोकतात्रिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.4 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.5 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के सुखान्त मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.6 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के शक्ति मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.7 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.8 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के स्वास्थ्य मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय एवं मूल्यों में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

5 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिणिक उपलब्धि में में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

6 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के मूल्यों एवं शैक्षिणिक उपलब्धि में में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

5. अध्ययन का परिसीमन

समय, शक्ति और धन के व्यर्थ खर्च को ध्यान में रखते हुए शोध की व्यापकता को समुचित रूप देने के लिए शोधार्थी ने अध्ययन क्षेत्र का परिसीमांकन निम्न रूप में किया।

1. प्रस्तुत शोध कार्य को अधिक विस्तृत न करने के उद्देश्य तथा समयाभाव को दृष्टिगत करते हुए झारखण्ड के राँची जिले का चयन किया।
2. शोध ग्रामीण एवं शहरी सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के श्रमिक विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया।
3. शोध अध्ययन उन छात्रों तक सीमित किया गया जो रांची जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में पढ़ाई के साथ–साथ काम कर रहे थे।
4. शोध ग्रामीण एवं शहरी श्रमिक विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ तक ही सीमित किया गया।
5. प्रस्तुत शोध कार्य की वैधता एवं विश्वसनीयता को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श चयन दो प्रकार के प्रतिदर्श–सभाव्यता प्रतिदर्श में यादृच्छिक चयन तथा गैर संभाव्यता प्रतिदर्श में गैर यादृच्छिक चयन द्वारा किया।
6. शोध कार्य के परीक्षण के लिए सांख्यिकीय विधि एवं शैक्षिक उपकरण का प्रयोग किया।
7. परीक्षण के लिए T-Test का प्रयोग किया।
8. उपकरण – डॉ० श्रीमती प्रतिभा देव द्वारा विकसित आत्म–संप्रत्यय सूची। शेरी एवं वर्मा (2010) द्वारा विकसित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया।

6. संबंधित शोध/साहित्य का अध्ययन

मानव प्रकृति सदैव से जिज्ञासु रही हैं, यही प्रकृति उन्हें सदैव कुछ करने, कुछ सीखने कुछ जानने एवं कुछ कर गुजरने की ओर प्रेरित करती है इसी कारण वह प्रायः क्या, क्यों और कैसे आदि प्रश्नों से सदैव उलझा रहता है और उसकी यही प्रवृत्ति अनुसंधान करने के लिए प्रेरित करती है अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो उसका लक्ष्य, उद्देश्य, समस्या योजना विरोधी सिद्धान्तों की सत्यता जाँचना तथा नवीन प्रवृत्तियों के तथ्यों का खोज करना इत्यादि संबंधित साहित्य के अध्ययन से ही संभव है अतः साहित्य का पुनर्रावलोकन अति आवश्यक है।

इस संबंधित शोध में विद्यार्थी श्रमिकों के आत्मप्रत्यय, मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित भारत एवं विदेशों में हुए संबंधित शोधकार्यों का पुनरावलोकन –

- **वर्मा (1968)** ने छात्राध्यपकों के मूल्यों, समायोजन अभिवृत्ति तथा व्यक्तिगत समस्याओं पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन किया।

- **बिष्ठ ए०आर० (1980)** ने ''विद्यालयी वातावरण और शैक्षणिक उपलब्धियों के संबंध में तनाव का अध्ययन'' पर शोध–पत्र प्रस्तुत किया। न्यादर्श में 600 विद्यार्थी लिये। शैक्षणिक तनाव व स्कूली तनाव के मध्यमान में लिंग के आधार पर कोई अंतर नहीं था, लेकिन लड़के और लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धि और शैक्षणिक तनाव में सार्थक अन्तर था।

- **राय (1980)** ने मूल्यों के विकास में निहित कुछ कारकों व प्रक्रियाओं का अध्ययन कर यह निस्कर्ष निकाला कि – समाजीकरण की प्रक्रिया बालकों में सहयोग, सहनशीलता धर्मनिष्ठा, अनुशासन व ईमानदारी के मूल्यों से साकारात्मक रूप से संबंधित हैं।

- **शर्मा, एम०सी० (1981)** ने अपना पीएच०डी० स्तरीय शोध कार्य किया, जिसका शीर्षक ''विभिन्न स्तर के अध्यापकों के मूल्यों, आत्म–प्रत्यय व व्यक्तित्व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' था। इन्होंने अपने शोध कार्य के परिणाम में पाया कि विभिन्न स्तर के अध्यापकों के व्यक्तित्व समायोजन में भिन्नता होती है, लेकिन अध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों में भिन्नता नहीं होती।

- **परमेश (1981)** ने ''भारत तथा ब्रिटेन में रह रहे भारतीय छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया'' इनके शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि भारत व विदेशों में रह रहे भारतीय छात्रों में सामाजिक, राजनैतिक व सौन्दर्यात्मक मूल्य निम्न थे। ब्रिटेन में भारतीय छात्रों के सौन्दर्यात्मक व सामाजिक मूल्य उच्च तथा राजनैतिक मूल्य निम्न स्तर में पाये गये।

- **भंगु, जसवंत सिंह (1982)** ने ''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का उनके मानसिक योग्यता, शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक, आर्थिक स्तर के संबंध में अध्ययन'' शीर्षक के अन्तर्गत शोध कार्य किया तथा निष्कर्ष के रूप में पाया कि शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों तथा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में प्रजातांत्रिक मूल्यों में सह–संबंध पाया गया।

- **सारस्वत, आर०के० (1982)** ने ''हाई स्कूल के विद्यार्थियों का समायोजन, मूल्यों, शैक्षिक निष्पत्ति, सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं लैंगिक आधार पर आत्मसम्प्रत्यय से संबंध'' विषय पर पीएच०डी० स्तरीय शोधकार्य करके निष्कर्ष के रूप में पाया कि छात्रों का आत्मसम्प्रत्यय, सामाजिक समायोजन की दृष्टि से सार्थक सकारात्मक पाया गया। छात्रों में आत्मसम्प्रत्यय एवं धार्मिक मूल्यों के बीच सार्थक सकारात्मक संबंध पाया गया, जबकि छात्राओं में ऐसा नहीं पाया गया। दोनों समूह में केवल बौद्धिक सम्प्रत्यय शैक्षणिक उपलब्धि की दृष्टि से सार्थक और सकारात्मक सह संबंध पाया गया। संपूर्ण आत्मसम्प्रत्यय की दृष्टि से छात्र एवं छात्राओं के शारीरिक, सामाजिक एवं नैतिक आयामों में सार्थक अन्तर पाया गया, जिसमें छात्राएँ इन आयामों में उच्च स्तरीय पायी गई।

- **शाह एवं शर्मा (1984)** इनके द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया तथा पाया गया कि जिन परिवारों का वातावरण संतोषप्रद है उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होगी जबकि इसके विपरीत निम्न वातावरण वाले परिवार के बच्चों की उपलब्धि निम्न होगी अतः बच्चों की उच्च शिक्षा हेतू माता–पिता को उपर्युक्त वातावरण प्रदान करना आवश्यक है।

- **स्वामी, प्रियाकान्ता एम० (1989)** ने ''अनाथ विद्यार्थियों के समायोजन दुश्चिन्ता, आत्म–सम्प्रत्यय एवं बुद्धिलब्धि का सामान्य छात्रों से तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर पीएच०डी० स्तरीय शोध किया और निष्कर्ष रूप में पाया कि सामान्य छात्र अनाथ छात्रों की तुलना में अधिक समायोजित होते हैं। अनाथ छात्रों में दुश्चिन्ता का स्तर उच्च पाया गया, जबकि आत्म–सम्प्रत्यय और बुद्धिलब्धि की दृष्टि से अनाथ और सामान्य बालकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- **जॉर्ज, इविंग (1990) –** ''चाइल्ड लेबर एंड वर्क'', नई दिल्ली इसमें दक्षिण भारत में ग्रामीण समुदाय पर अध्ययन कर बताया कि बाल श्रमिकों की समस्या से संबंधित शोध व योजनाएँ बनाने के लिए इतना धन खर्च किया जाता है, किंतु इनका लाभ आज तक इन बालश्रमिकों को प्राप्त नहीं हो सका इसके पीछे कई कारण है जैसे – बालश्रमिक ज्यादातर असंगठित क्षेत्रों में कार्य करते हैं तथा इसके बारे में जितने भी कानून व नीतियाँ बनाई जाती है उनमें कई कमियाँ हैं

मुख्यतः यह व्यवहारिक रूप से लागू ही नहीं हो पाती एवं बाल श्रमिकों में इनके प्रति जागरूकता का अभाव पाया जाता है।

- **पार्टी, आर0एन0 (1991) –** ''रिहैविलिटेशन ऑफ चाइल्ड लेबर इन इंडिया'', प्रस्तुत अध्ययन में बालश्रमिकों का अध्ययन कर पाया गया कि आज भी 17 मिलियन से अधिक बच्चे अस्वास्थ्यकर व प्रदूषित वातावरण में कार्य कर रहे हैं जिससे उनके शारीरिक, मानसिक व सामाजिक स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है। बालश्रमिकों के लिए इतने कानून व नीतियाँ बनाई गयी है परंतु फिर भी बाल–श्रमिकों की संख्या में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आयी। इसका प्रमुख कारण बालश्रमिकों में इनके प्रति जागरूकता का अभाव पाया गया है।

- **बुर्रा, नीरा (1998) ''बोर्न टु वर्क – चाइल्ड लेबर इन इंडिया''** – नीरा बुर्रा ने भारत में बालश्रमिकों की स्थिति पर गहन अध्ययन किया तथा उन्होंने बालश्रमिकों के इतिहास, कारण तथा बालश्रमिकों के द्वारा किये गये कार्यों का विस्तार से वर्णन किया है। इनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उन परिस्थितियों का पता लगाना था जो कि उसे इस अवस्था में ही श्रम करने को मजबूर करती है।

- **शर्मा, मीना (2005) –** ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक स्तर, नैतिक मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।''

  विद्यालय में शिक्षा का आधार बनाकर नैतिक मूल्यों पर किये परीक्षण के परिणाम इस प्रकार रहे ग्रामीण शहरी छात्र–छात्राओं के आर्थिक स्तर का उनके मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। घर–परिवार को आधार बनाकर किये गए नैतिक मूल्यों का समन्वित रूप से अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि शहरी छात्राओं में अधिक सामाजिक तथा नैतिक मूल्य पाये जाते हैं लेकिन इनकी निर्णय क्षमता समान होती है। शहरी छात्र–छात्राओं का आर्थिक स्तर, ग्रामीण छात्र–छात्राओं से अधिक अच्छा होता है।

- **शैली (2008)** ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन से यह निस्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक धनात्मक प्रभाव पाया गया (2) विद्यार्थियों

के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव न के बराबर पाया गया।

- **राघवेन्द्र हरमाडे (2014)** ''बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन।''

    (1) प्रस्तुत शोध में बाल श्रमिक विद्यार्थियों की उग्र प्रमुख समस्याएँ पायी गयी – आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण शिक्षा प्राप्त करने हेतु आवश्यक संसाधन, पुस्तकें, वेश–भूषा इत्यादि का उपलब्ध न हो पाना।

    (2) मजदूरी करने जाने के लिए विद्यालय में पूरे समय तक उपस्थित न रह पाना।

    (3) रात्रि को थक कर देर से घर आने के कारण अध्ययन न कर पाना।

    (4) पारिवारिक कार्यो के प्रति जिम्मेदारियाँ पूर्ण करने के कारण अध्ययन न कर पाना।

- **रेणु Vol.–2 (2017)** ने ''छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन सहगामी पाठ्य क्रियाओं में भाग लेने के आधार पर'' शीर्षक पर अध्ययन किया तथा यह पाया कि विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं तथा जो नहीं लेते हैं उनके मानसिक स्वास्थ्य में कोई अंतर नहीं पड़ता तथा उनकी शैक्षणिक योग्यता पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले भाग न लेने वालों से आगे हैं।

अतः संबंधित शोध साहित्य के समीक्षात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि बाल श्रमिकों से संबंधित अल्प शोध कार्य हुए हैं इन अध्ययनों के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर ही न ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बालश्रम के संबंध में अनेक अध्ययन हुए हैं। जैसे भारत में – चौधरी (1963) ने बाल श्रमिकों की सामाजिक व आर्थिक समस्याओं पर शोध अध्ययन किया। क्षीर सागर (1987) ने काम–काजी बच्चों की समस्या और शिक्षा पर शोध कार्य किया। सबिता चतुर्वेदी ने चाइल्ड एण्ड स्ट्रीट चिल्ड्रन' पर वर्कशॉप आयोजित की, बी0एम0 दिनेश (1988) ने बच्चो की आर्थिक गतिविधियाँ, दशा, कारण एवं परिणाम, मंजू गुप्ता (1987) ने भारत में बालश्रमिकों के लिए पाठ्य सामग्री आदि पर अपने शोध किये। माले (1990) ने विद्यार्थी बाल मजदूरों की समस्या पर शोध किया। गुर्जर (1995) ने बाल मजदूरों की पारिवारिक संरचना एवं समस्याओं का अध्ययन किया अंसारी (2009) ने

कबाड़ी बटोरने वाले बच्चों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक अध्ययन पर शोध किया। राजकुमार (2011) ने बाल श्रमिक समस्या के संबंध में प्राथमिक समस्याओं का अध्ययन शोध कार्य द्वारा किया। पूर्व शोध कार्यो के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बाल श्रमिकों खासकर विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रमिक विद्यार्थियों से संबंधित अति अल्प शोध कार्य ही हुए है। **श्रमिक के रूप में कार्य कर अध्ययन भी करने की समस्या देश की एक गंभीर समस्या है।** अतः इस दिशा में और शोध कार्यो की अति आवश्यकता है ताकि विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रमिक विद्यार्थियों के शैक्षिक समस्याओं तथा सर्वांगीण विकास से संबंधित समस्त कारणों का विस्तृत अध्ययन हो सके तथा परिणाम के आधार पर उसका निदान करने का प्रयास किया जा सके।

7. अनुसंधान की विधियाँ एवं प्रविधियाँ

अनुसंधान एक व्यवस्थित व निश्चित अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत संबंधित चरों का घटनाओं के पारस्पारिक संबंधों का अन्वेषण उपयुक्त वैज्ञानिक विधियों द्वारा किया जाता है तथा वैज्ञानिक मापदण्ड पर अनुसंधान किया जाता है इस वैज्ञानिक विधि को ही प्रविधि का नाम दिया गया है शोध में अनुसंधान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान निकाला जाता है। वॉन डैलेन ने वर्णनात्मक विधियों के तीन प्रकार बताये –

(1) सर्वेक्षण अध्ययन विधि,

(2) अंतर्संबंधों का अध्ययन, तथा

(3) विकासात्मक अध्ययन।

वर्त्तमान शोध की विधि विवरणात्मक की सर्वेक्षण विधि होगी जिसके अन्तर्गत प्राथमिक आंकड़े संग्रहण हेतू प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा निरीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा।

- **आत्मप्रत्यय मापन हेतु डॉ0 प्रतिभा राव, Self concept rating scale का प्रयोग किया जाएगा।**

- **मूल्य मापन हेतु – शैरी एवं वर्मा, Personal value questionnaire मापनी का प्रयोग किया जाएगा।**
- **शैक्षिक उपलब्धि के परीक्षण हेतु कक्षा 11वीं के अंक को लिया जायेगा है।**

शोध अभिकल्प

शोध अभिकल्प एक समग्र रणनीति को संदर्भित करता है जिसके हम अध्ययन के विभिन्न घटकों को एक सुसंगत और तार्किक तरीके से स्वीकृत करने के लिए चुनते है जिससे हम प्रभावी क्षेत्र से अनुसंधान समस्या को संबोधित कर सकते हैं यह संग्रह माप और डेटा के विश्लेषण के लिए डिजाईन तैयार करता है।

यह किसी भी वैज्ञानिक पद्धति से कार्य करने के पूर्व उसका प्रत्येक स्तर पूर्व निर्धारित होता है शोध अभिकल्प वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। शोध अभिकल्प से यहाँ अभिप्राय अनुसंधान के प्रतिमान से हैं इसके अन्तर्गत संबंधित चरो की संक्रिया की रूपरेखा तैयार की जाती है कि संबंधित शोध में निम्न रूप रेखा तैयार की गई हैं।

चर	स्वतंत्र चर	ग्रामीण और शहरी श्रमिक विद्यार्थी (छात्र–छात्राएँ)
	परतंत्र चर	आत्मप्रत्यय, मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि
उपकरण	आत्मप्रत्यय मापन हेतु डॉ0 प्रतिभा राव, Self concept rating scale का प्रयोग किया जाएगा। मूल्य मापन हेतु – शैरी एवं वर्मा, Personal value questionnaire मापनी का प्रयोग किया जाएगा।	
सांख्यिकीय विवरण	मध्यमान मानक विचलन टी टेस्ट	
शैक्षिक	कक्षा ग्यारहवीं का अंक	

उपलब्धि		

न्यादर्श

संबंधित शोध में भारत देश के झारखण्ड राज्य के राँची जिले के 40 शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों को लिया जाएगा तथा 400 विद्यार्थी श्रमिकों को न्यादर्श के रूप में लिया जायेगा।

8. अध्ययन का संभावित योगदान

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रमिक छात्र– छात्राओं के आत्मप्रत्यय उनके मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जाएगा, जिसमें उन विद्यार्थी श्रमिकों के विभिन्न समस्याओं जैसे – आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, पारिवारिक तथा उनके विकास में बाधक तथा सहयोगात्मक तथ्यों का अध्ययन किया जाएगा। परिणामतः प्रदत्तो के संग्रहण तथा विश्लेषण के आधार पर भविष्य में इस प्रकार के आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लाभान्वित होने की संभावना है –

(1) पारिवारिक वातावरण में सुधार की संभावना रहेगी।

(2) श्रमिक विद्यार्थियों के अभिभावकों में जागरुकता की संभावना रहेगी।

(3) विद्यालयी वातावरण में सुधार की संभावना होगी अर्थात इस प्रकार के बच्चों को चिन्हित कर इनके समस्याओं का निदान करने का शिक्षक प्रयास करेंगे।

(4) सरकार के ध्यान आकृष्ट होने की संभावना रहेगी।

इस प्रकार इस अध्ययन से श्रमिक विद्यार्थियों के विकास में आने वाली अधिकांश बाधाओं को अभिभावक, विद्यालय के शिक्षक समाज तथा सरकार मिलकर समाधान करने का प्रयास करेगें अर्थात सभी का ध्यान श्रमिक छात्र–छात्राओं की ओर आकृष्ट होगा जिससे आने वाली पीढ़ी भी लाभान्वित होगी और समाज के लोगों को एक नई दिशा मिलेगी।

9. शोध की रूपरेखा का अध्यायवार विभाजन

प्रस्तुत शोध निम्न अध्यायों में विभाजित रहेगी :–

प्रथम अध्याय – प्रस्तावना

1.1 समस्या की पृष्ठभूमि

1.2 संकल्पनात्मक विवरण

1.3 अध्ययन की आवश्यकता एवं सार्थकता

1.4 समस्या कथन

1.5 अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरण

1.6 अध्ययन का उद्देश्य

1.7 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1.8 अध्ययन की परिसीमाएँ

द्वितीय अध्याय – संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 संबंधित साहित्य का महत्व

2.2 संबंधित साहित्य का अवलोकन

2.3 भारतीय शोध साहित्य

2.4 विदेशी शोध साहित्य

तृतीय अध्याय – शोध का प्रारूप

3.1 शोध विधि तथा न्यादर्श

3.2 न्यादर्श का चयन

3.3 प्रमुख उपकरण

3.4 प्रमुख उपकरण का निर्माण

3.5 परीक्षण का प्रशासन और फलांकन

3.6 सांख्यिकी प्रविधि

चतुर्थ अध्याय – प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय – शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 परिकल्पनाओं की सत्यता की पुष्टि

5.2 शोध निष्कर्ष

5.3 शैक्षिक उपयोगिता

5.4 शोध निष्कर्षों की आलोचना

5.5 भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

- कपूरी, अर्चना (2009) – पारिवारिक परिवेश का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव।
- कुमार, अरूण, शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, 2010.
- कुमार, वीरेन्द्र, ग्रामीण बाल श्रमिक, कुरूक्षेत्र।
- कुमार, संदीप, बाल श्रम की एक झलक, 2007.
- कुमार, श्याम, झारखण्ड एक विस्तृत अध्ययन।
- त्यागी, निशि, निबंध, एकेडमिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली सोलहवाँ–2013.
- तिवारी, राम कुमार, झारखण्ड की रूपरेखा, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची, नवम् 2011.
- पाठक, गणेश कुमार कैसी बदहाल जिन्दगी जी रहे है हमारे नौनिहाल कुरूक्षेत्र, 2006.
- पाठक, पीडी, शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2013–2014.
- पाण्डेय, रामशकल एवं मिश्र, करुणाशंकर, मानवाधिकार और मूल्य शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, 2009–10.
- व्यास, हरशिचन्द्र, हम आर हमारी शिक्षा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर प्रथम – 2001.
- रोली शिवहरे, प्रशांत दूबे, बाल–श्रम (कुछ कानूनी पहल), विकास संवाद, 2010
- सफल प्रकाशन, नवम् राँची (2009).
- शर्मा, आर०ए०, शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया आर लाल बुक डिपो –2013.